सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

अज्ञेय

विचार और चिंतन

मूल्य : पाँच सौ पंचानवे रुपये मात्र

पुस्तक	:	अज्ञेय : विचार और चिंतन
सम्पादक	:	डॉ. सुरेन्द्र शर्मा
प्रकाशक	:	**विकास प्रकाशन** 311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027
संस्करण	:	प्रथम, 2021 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	शुभी कम्प्यूटर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	595/-
ISBN	:	978-93-90688-55-5

अनुक्रमणिका

1	अज्ञेय के कथा साहित्य में दार्शनिक एवं आध्यात्मिक मूल्य **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	17-33
2.	अज्ञेय की शिल्प योजना **डॉ. ओम प्रकाश सैनी**	34-43
3.	अज्ञेय का भाषा चिंतन और उनकी कहानियों की भाषा **डॉ. राजेन्द्र सिंह 'साहिल'**	44-56
4.	सनातन मूल्य और अज्ञेय का कथेतर गद्य **डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंघवी**	57-61
5	'उतर प्रियदर्शी' का दृश्यकाव्य **डॉ. लव कुमार**	62-68
6.	अज्ञेय के काव्य में ममत्व एवं परत्व से मुक्ति **डॉ. राजन तनवर**	69-76
7.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में 'असाध्यवीणा' **डॉ. यशोदा मेहरा**	77-83
8.	मानव मूल्य के संदर्भ में अज्ञेय की अवधारणा **डॉ. सुरेन्द्र शर्मा**	84-98
9.	नई कविता के प्रति अज्ञेय की दृष्टि **सुरेन्द्र कुमार**	99-109
10.	अज्ञेय की कविता में प्राकृतिक सौन्दर्यबोध **डॉ. प्रिया ए.**	110-119
11.	अज्ञेय का यात्रा साहित्य **डॉ. रीना डोगरा**	120-124
12.	अज्ञेय के काव्य की दार्शनिक दृष्टि **प्रो. मनोज कांबले**	125-132

2

अज्ञेय की शिल्प योजना

-डॉ. ओम प्रकाश सैनी

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' हिंदी साहित्य में प्रयोगवादी काव्य धारा के प्रवर्तक हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी अज्ञेय ने साहित्य की तमाम विधाओं यानी कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि पर लेखनी चलाई, लेकिन एक कवि के रूप में इन्हें विशेष ख्याति प्राप्त हुई। अज्ञेय प्रयोगवाद के आधार स्तंभ हैं। 'प्रयोग' शब्द की विवेचना करने से पहले प्रयोगवाद की पृष्ठभूमि को समझ लेना अति आवश्यक है। प्रयोगवाद की पृष्ठभूमि में द्वितीय विश्वयुद्ध और उससे उत्पन्न परिस्थितियों का उल्लेख करना नितांत आवश्यक है। द्वितीय विश्व युद्ध की भयंकरता ने मानव मूल्यों को विध्वंस के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया। हमारे प्राचीन नैतिक मूल्यों के स्थान पर नवीन मूल्यों का अन्वेषण हुआ परिणामस्वरूप संकटकालीन विकट परिस्थितियों के बीच मनुष्य को यह अहसास होने लगा कि अब प्राचीन मूल्यों, परंपराओं और विश्वास का समय जाता रहा। प्राचीन स्थापित मूल्यों दया, ममता, करुणा, प्रेम, तप, त्याग, परोपकार आदि का किला अब ध्वस्त होने के कगार पर है, उसके स्थान पर तर्क, विश्लेषण, अनास्था और अविश्वास ने जन्म ले लिया है। मानव जीवन में मनोविज्ञान, अति यथार्थवादी और अस्तित्ववादी दर्शन का बोलबाला हो गया। पाश्चात्य अस्तित्ववादियों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्र है। वह किसी सामाजिक नैतिक बंधन में नही बँधा और न ही वह किसी सामाजिक संस्था के प्रति उत्तरदायी है। यह वह समय है जब सामाजिक चिंतन में काफी बदलाव आया। सन 1938 से लेकर सन 1942 तक का कार्यकाल मानव जीवन में पीड़ा, कुंठा, संत्रास, घुटन, पीड़ा और निराशा लेकर आया जिस कारण आगे चलकर प्रयोगवाद का जन्म हुआ। सन 1943 में कविवर अज्ञेय ने पहले 'तार सप्तक' का प्रकाशन किया। सन 1951 में दूसरा 'सप्तक' सामने आया और 1959 में अज्ञेय के संपादन में तीसरा 'सप्तक' प्रकाशित हुआ। चौथा 'सप्तक' भी अज्ञेय के ही नेतृत्व में सन 1979 में प्रकाशित